# आत्मबोध की अग्नि

*तुम्हारे भीतर एक दीया है, जो सदा से जल रहा है। सदा जलता रहेगा। कितना ही ढक जाए, जैसे बादल आ जाते हैं, आकाश में सूरज ढक जाता है। इससे कोई सूरज मिटता नहीं। जरा बादलों की परतों को हटाओ, सूरज फिर प्रगट हो जाता है*

एक छोटी कहानी से तुम समझो। एक सम्राट को उसके ज्योतिषी ने कहा कि इस वर्ष जो फसल आएगी उसे जो भी खाएगा, पीएगा, वह पागल हो जाएगा। तो तुम कुछ बचाने का उपाय कर लो। सम्राट ने कहा, 'तो पिछले वर्ष की फसल हम बचा लें। लेकिन ज्योतिषी ने कहा, 'वह इतनी काफी नहीं है कि तुम्हारे पूरे राज्य के लोग उससे एक साल तक जी सकें। इतना हो सकता है कि महल में रहने वाले लोग; तुम, मैं, तुम्हारी रानी, तुम्हारे बच्चे, थोड़े-से लोग बच जाएं।'

सम्राट ने कहा, 'इन थोड़े-से लोगों को बचाकर क्या सार होगा? और जब मेरा पूरा साम्राज्य ही पागल हो जाएगा, तो उनके बीच न-पागल होने में और भी अड़चन होगी। तो तुम एक काम करो, सिर्फ तुम पुरानी फसल को बचा लो, पुराने अनाज को; और हम सब को पागल हो जाने दो। एक ही बात पक्का रखना, तुम पागल नहीं रहोगे। तो तुम एक-एक व्यक्ति को जो भी तुम्हें मिले, उसे हिलाकर कहना कि 'तू भी पागल नहीं है। बस, इतनी तुम कसम खा लो।'

तो सम्राट ने ठीक कहा। अगर पागल को स्मरण दिला दिया जाए, होश दिला दिया जाए पागल का, तो जो अन्न से गया है, वह तो शरीर पर ही होगा; आत्मा तक नहीं पहुंच सकता। वह जो बेहोशी है, बाहर-बाहर होगी; भीतर नहीं पहुंच सकती।

यह कहानी सूफियों की है, और बड़ी प्यारी है।

ऐसा ही हुआ। सारा साम्राज्य पागल हो गया। सिर्फ ज्योतिषी बचा। बड़ी कठिन उसकी यात्रा थी, क्योंकि पागलों को हिलाना बड़ा मुश्किल था। कितना ही उनको कहो, वे सुनते न थे। कितना ही चेताओ, चेतते न थे। कितना ही हिलाओ, जमे थे, हिलते न थे। लेकिन फिर भी कुछ लोग हिले, कुछ लोगों को याद आई। और जिनको याद आई, वह ज्योतिषी कहता, 'तुम भी यही करो, दूसरों को हिलाओ।' क्योंकि जो अन्न है, वह भीतर तक नहीं जा सकता; वह आत्मा नहीं बन सकता। ऊपर-ऊपर बेहोशी, तंद्रा ऊपर-ऊपर है। जैसे कोई आदमी सो गया हो, तुम हिलाओ और वह जग जाए तो जागरण कभी खोता नहीं; सिर्फ भीतर छिप जाता है। वासना ने, आकांक्षा ने, चाह ने तुम्हें विषाक्त किया है। तुम्हें धुएं से भर दिया है। लेकिन बस तुम्हारी देह पर ही है वह धुएं का आवरण।

प्रकाश से तुम्हारा मिलन अगर तुम अंधेरे होते तो कभी भी नहीं हो सकता था। तुम अंधेरा नहीं हो, तुम भी प्रकाश हो। तुम्हारे दीये की लौ चाहे कितनी ही मद्धिम जलती हो, उसके चारों तरफ चाहे कितना ही अंधेरा हो, वह स्वयं अंधेरा नहीं है। कोई चाहिए, जो तुम्हें हिलाए, कोई तुम्हें जगाए, कोई तुम्हें होश दे। बस, उतना होश! तत्क्षण तुम पाओगे, एक क्षण में क्रांति घट सकती है। और एक क्षण में तुम बुद्ध पुरुष हो जाओगे। तुम स्वयं बुद्ध हो जाओगे।

तुम अगर अंधेरे होते तो तुम्हारी मुक्ति का कोई उपाय नहीं था। अंधेरे की कोई मुक्ति नहीं हो सकती। क्यों? अंधेरा है ही नहीं। तुम्हारी मुक्ति हो सकती है क्योंकि तुम अंधेरा नहीं हो। बिन बाती बिन तेल तुम जल रहे हो। तुम्हारे भीतर एक दीया है, जो सदा से जल रहा है। सदा जलता रहेगा। कितना ही ढक जाए, जैसे बादल आ जाते हैं, आकाश में सूरज ढक जाता है। इससे कोई सूरज मिटता नहीं। जरा बादलों की परतों को हटाओ, सूरज फिर प्रगट हो जाता है। थोड़ी-सी हवाएं चाहिए बुद्ध पुरुषों की, कि तुम्हारे बादल छितर-बितर हो जाएं और तुम्हें स्मरण आ जाए कि तुम कौन हो!

आत्मबोध–कोई आत्मा को पैदा करना नहीं है, सिर्फ भूली आत्मा की पुनः स्मृति है, सुरति है।

तो मैं जो कर रहा हूं चेष्टा, वह तुम्हें हिलाने की

है। उस हिलाने में तुम नाराज भी होते हो। क्योंकि किसी को हिलाओ, कोई सोता है उसे जगाओ, कोई मजे में विश्राम कर रहा है, उसकी तंद्रा तोड़ो, वह नाराज होता है। शिष्य सदा गुरुओं पर नाराज होते हैं, जब तक कि वे जाग न जाएं। गुरुओं को छोड़ भी नहीं सकते क्योंकि कहीं न कहीं गहरे तल में सरकती हुई उनको भी यह बात तो समझ में आती ही रहती है कि गुरु जो कह रहा है, ठीक ही कह रहा है।

शिष्य में दो तल होते हैं। एक तल पर तो वह जानता है, गुरु जो कह रहा है, बिलकुल ठीक कह रहा है। लेकिन एक तल पर वासनाएं मन को पकड़े हैं, और वह सोचता है, थोड़ी देर और सो लेते तो क्या हर्ज था? सपना बड़ा मधुर था, मीठा था और सपना बीच में तोड़ दिया। थोड़ी देर सो लेते तो क्या हर्ज था, इसलिए नाराज भी होता है।

शिष्य का एक तल गुरु से लड़ता है, और शिष्य का एक तल गुरु को छोड़ भी नहीं सकता।

इसलिए जब भी तुम सदगुरु के पास पहुंच जाओगे, बड़ा संघर्ष पैदा होगा। आधे से तुम भागना चाहोगे, हटना चाहोगे, बचना चाहोगे। तुम सब उपाय खोजोगे कि कैसे निकल भागें? और आधे से तुम रुके रहोगे, वापिस बार-बार लौट जाओगे। भागोगे तो भी वापिस आ जाओगे। क्योंकि आधा कहेगा, कहीं और जाने का कोई अर्थ नहीं। वह मंजिल आ गई, जिसकी तलाश थी।

गुरु पूरा एक है; शिष्य आधा-आधा है। शिष्य दो है, द्वैत है।

पर तुम्हारे भीतर जो व्यर्थ है, उससे ही छुटकारा दिलाना है। तुम्हारे भीतर जो सार्थक है, ताकि वह अपनी पूर्णता में, स्वच्छता में, प्रगट हो जाए। तुम्हें आग में डालना ही होगा, ताकि कचरा जल जाए और तुम्हारा स्वर्ण निखर आए। स्वर्ण तो जलता नहीं, सिर्फ निखरता है। तुम्हारा प्रकाश तो प्रगट होगा, तुम्हारा अंधेरा भर खो जाएगा। जीसस ने कहा है, 'तुम जो नहीं हो, वही मैं तुमसे छीन लूंगा, और तुम जो हो, वही मैं तुम्हें दे दूंगा।' वचन विरोधाभासी लगता है, पर यह सत्य है : वही तुम से छीन लूंगा, जो तुम नहीं हो। तुमसे मैं भी वही मांगता हूं, जो तुम नहीं हो। क्योंकि उससे तुम्हारा छुटकारा हो जाए, तो वह प्रगट हो सके, जो तुम हो और इस क्षण ही अभी, यहीं, वह बाती, वह दीया तुम्हारे भीतर जल रहा है। जो अकारण है। जिसका तेल कभी चुकेगा नहीं क्योंकि तेल नहीं है। जिसकी बाती कभी बुझेगी नहीं क्योंकि बाती नहीं है। सिर्फ ज्योति है, सिर्फ प्रकाश है। वह शुद्ध प्रकाश तुम्हारा स्वभाव है।

अंधेरे से प्रकाश का मिलना कभी नहीं होता।

सूफी फकीर बायजीद अपने शिष्यों से कहता था, जब तक तुम्हें जगा ही न दूं तब तक मैं तुम्हें सताए ही चला जाऊंगा। और तुम भाग न सकोगे। मैं तुम्हारा पीछा करूंगा। मैं प्रेत की तरह तुम्हारे चारों तरफ घूमूंगा, जब तक तुम जग ही न जाओ! और जिस दिन तुम जग जाओगे, तुम्हें दूसरों के पीछे लगा दूंगा, तुम इनको जगाओ। सारी पृथ्वी ने वह फसल खा ली, क्योंकि वे बेहोश हैं। कभी-कभी कोई एकाध आदमी उस फसल के विषाक्त भोजन से बच जाता है। उन्हीं को हम बुद्ध कहते हैं, कृष्ण कहते हैं, क्राइस्ट कहते हैं। वह तुम्हें जगाए चला जाता है। वह तुम्हें कुछ देने वाला नहीं है, जो तुम्हारे पास है, उसी के प्रति तुम्हें सजग कर देने वाला है।

*—ओशो*

*बिन बाती बिन तेल*
*प्रवचन नं. 19 से संकलित*
*(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)*